डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

'कितने चौराहे' का कथानक (भाग-4)

उपन्यास में आजादी के दिनों में होने वाले हिन्दू - मुस्लिम दंगों का भी चित्रण है। इस दंगे में सहायता कार्य करते समय सूर्यनारायण और हाफिज़ साहब मारे जाते हैं। क्लब के सदस्य और कस्बे के नागरिक इन्हें सम्मान के साथ अंतिम क्रिया के लिए ले जाते हैं। अररिया ट्रेजरी पर झंडा फहराने के लिए जुलूस लेकर प्रियोदा, मनमोहन, कृत्यानंद, अशर्फी, भोला और तपू जाते हैं। गोलियाँ चलती है। प्रियोदा, अशर्फी, कृत्यानंद, भोला और तपू गोलियों के शिकार होते हैं। ट्रेजरी पर तिरंगा फहराने लगता है। प्रियोदा ने कहा था 'हममें से जो बचेगा। वही सबका अंतिम संस्कार करेगा।' मनमोहन अपने साथियों के साथ पाँचों की अर्थी शमसान घाट तक ले जाता है। वही अंतिम क्रिया के बाद पुलिस द्वारा गिरफतार कर लिया जाता है। जेल से छूटने के बाद भी मनमोहन घर न जाकर कहीं अन्यत्र चला जाता है।

उपन्यास में मटरू, सरवतियाँ और काका पुष्पी के माध्यम से बालमन की कोमलता के साथ पारिवारिक ममता

Scanned by CamScanner

पर भी गहरा प्रकाश डाला गया है। लेकिन मुख्य रूप से इस उपन्यास में स्वतंत्रता में किशोर और युवक के क्रिया कलापों और उनके त्यागमय जीवन की गाथा ही कही गयी है। इसका क्षेत्र सीमित होने के कारण इसे एक कहानी में समेटा जा सकता था लेकिन घटनाओं और वर्णनों के विस्तार ने इसे एक उपन्यास का रूप दे दिया।

Scanned by CamScanner